ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

रामदरश मिश्र के ललित निबंधों की भाषा शैली

Language Style of Lalit Essays of Ramdarash Mishra

Paper Submission: 02/08/2020, Date of Acceptance: 19/08/2020, Date of Publication: 21/08/2020

विक्रम सिंह फर्त्याल
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

जगदीश चन्द्र जोशी
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
स्वामी विवकानंद राजकीय
स्नात्कोत्तर महाविद्यालय,
लोहाघाट (चम्पावत)
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

रामदरश मिश्र एक शसक्त ललित निबंधकार हैं। साहित्य में लालित्य का कार्य भाषा के द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। भाषा को लालित्यपूर्ण बनाना मिश्रजी भली–भाँति जानते हैं। मिश्रजी का साहित्य भाषा का असीम भण्डार है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। अभिव्यक्ति तभी सफल मानी जाती है जब उसकी शैली प्रभावशाली हो। यदि भाषा के प्रकटीकरण का ढंग विभिन्न कलाओं से परिपूर्ण हो तो साहित्य सृजनशीलता को जन्म देता है। रामदरश मिश्र के ललित निबंध साहित्य में सरल, सहज और बोलचाल की भाषा का समावेश है। मिश्रजी की भाषा साधारण समाज के सर्वथा अनुकूल है। निबंधों की भाषा में तत्सम–तद्भव, उपसर्ग–प्रत्यय, लोकोक्ति और मुहावरे प्रचुर मात्रा में समाहित हैं। निबंधों में संवाद हैं तो गीत भी हैं। ललित निबंधों में भाषा की प्रांजलता है तो शैली का वैविध्य भी है। शब्द चातुर्य के साथ वाक्यों को सरल और संक्षिप्त भी रखा है। मिश्रजी के निबंधों में आत्मीयता और निजी जीवन के अनुभवों का ऐसा संयोग बना है कि भाषा जीवंत हो उठी है। संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि शब्दों का प्रयोग दर्शनीय है। रूढ, यौगिक, देशज, विदेशज और संकर शब्दों का मिलन निबंधों को रोचकता प्रदान करने में समर्थ हैं। इन शब्दों का सहज–संयोग मिश्रजी के निबंध साहित्य की पहचान है।

Ramdarash Mishra is a forceful Lalit essayist.The act of elegance in Iterature is accomplished only by language. Creatung the language full of elegance, Mishra ji is well aware of it. Mishra ji's literature is an emmense store house of language. Language is medium of expression. Expression is considered successful only when its style is impressive. If the form of language is full of the arts, then the literature creates creativity. The lalit essay literature of Ramdarash Mishra comprises of simple, innate and colloquial language. Mishra ji's language is down right of ordinary soceity. The language of the essay is full of Tadbhav-Tatsam, prefix-suffix, proverbs and idioms and phrases are abundantly contained. The essays have heart-touching dialogues then the songs too. All the essays have gladness of language as well as variations of style. The sentenses with the word aquarius are also kept simple and concise. Mishra ji's essays make such a coincidence of interest and personal life experience that language is viven. The use of Sanskrit, English, Urdu, Persian etc words is spectacular. The spontaneous coincidence of the words is the identity of Mishra ji's essays literature.

मुख्य शब्द : कानाफूसी, तनख्वाह, नाचीज, उजड्ड, गंवार, लट्ठमार, बावजूद, लैंग्वेज, फुटपाथ, हिन्दीवालाज, पुनर्जन्म, अन्जान, बौर, नालायक, साम्प्रदायिक, कैकारे, तीर, लट्ठमार, कल्पनाविलास।

Inkling, Emolument, Unobservant, Carl, Sylvan, Uncivic, Language, Footpath, Hindiwalas, Rebirth, Unknown, Blossom, Undignified, Communl, Cuckoos, Shore, Utopian

प्रस्तावना

भाषा अभिव्यक्ति का सबसे श्रेष्ठ साधन है। भाषा मन के भावों और विचारों को संस्कारित कर संस्कृत मानव का निर्माण करने में सहायक है। भाषा किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को सृजनशील और समर्थ बनाती है। मिश्रजी ने अपने ललित निबंधों में इस बात का सहज ध्यान रखते हुए अपने लेखक धर्म का पालन किया है। जहां एक ओर भाषा की प्रांजलता का समावेश किया है वहीं दूसरी ओर विभिन्न भाषाओं के शब्दों का समुचित प्रयोग किया है। ग्रामीण शब्दों का समावेश उनके ललित निबधों में सर्वत्र देखने को मिल जाता है–''भैया शब्द का यहाँ अर्थापकर्ष हो गया–भैया माने यू.पी., बिहार के उजड्ड–गंवार और

लट्ठमार लोग।''1 मिश्रजी के ललित निबंध भाषा और शैली विज्ञान की दृष्टि से समृद्ध हैं। भाषा सौन्दर्य तब और अधिक बढ़ जाता है जब उसमें स्थानीयता का भी समावेश किया जाता है। इस दृष्टि से रामदरश मिश्र का साहित्य अन्य के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग प्रायः सभी निबंधों में किया गया है। भाषा के रूप में तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, लोक भाषा के शब्द, मुहावरे, कहावतें, सूक्तियाँ, सरल और चित्रात्मक भाषा का महासंगम है। निबंध साहित्य की विभिन्न शैलियों यथा प्रश्नवाचक, उद्धरण, विचारात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक, प्रसाद, भावात्मक, समास और संवादात्मक का प्रयोग यथोचित रूप में सुन्दर ढंग से किया गया है। निबंध की शैलियां विभिन्न लेखक की मनःस्थिति पर निर्भर करती हैं। इस सम्बंध में डॉ. कैलाश चन्द्र माथुर ने निम्न शब्दों में व्याख्या की है–

''निबंध की शैली भी विभिन्न प्रकार की होती है, क्योंकि यह लेखक की चित्तवृत्ति पर निर्भर रहती है। शैली में कभी विचार–गाम्भीर्य होता है, कभी व्यंग्य की तीक्ष्णता अथवा विरोधाभास तथा हास्य का पुट अन्यथा संवाद का आच्छादन। इसके अतिरिक्त लेखक शब्दों और वाक्यों के विन्यास के प्रति बहुत सतर्क रहता है। उपयुक्त शब्दों का चयन वह विना किसी प्रयास के करता रहता है तथा अपने उपकरण को अति सुसंगठित एवं सुन्दर ढंग से व्यंजित करता है।''2

मिश्रजी के ललित निबंधों में कलात्मकता, सौन्दर्यत्व, कल्पनाविलास, भाव परिष्कार निजिपन, स्वछंदता, सजीवता आवश्यक संगति का समावश्यक शब्द–चिंतन विद्यमान है। मिश्रजी एक श्रेष्ठ ललित निबंधकार हैं। डॉ. प्रभाकर माचवे ने ललित निबंध व निबंधकार की पहचान के संबंध में विद्वता, फक्कड़पन, यायावरी, वृत्ति, लोककथा–प्रेम, सूक्ष्म विचार शक्ति और गद्य काव्य शैली को सम्मिलित किया है।3

एक ललित निबंधकार के प्रायः सभी गुण मिश्रजी में स्वमेव समाहित हैं। निबंध लेखक के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं। मिश्रजी के एक कुशल निबंधकार होन कव पीछे उनका एक श्रेष्ठ कवि होना भी है। वे पहले कवि और बाद में एक निबंधकार बने। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं का अनुभव एक कुशल ललित निबंधकार बनाने में सहायक ही रहा। जिस प्रकार एक कुशल मूर्तिकार अपनी मूर्ति को सजाता है ठीक उसी प्रकार ललित निबंधकार प्रत्येक शब्द को सजा–सँवारकर उसे अपने भावों और विचारों के कलेवर में ढालकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इस प्रकार का गुण मिश्रजी के अन्तःकरण में साहित्य की अधिष्ठात्रि वाग्देवी ने परिपूर्ण किया है। उनका निबंध साहित्य अपनापन का अजायबघर है, जहाँ जीवन का हर पक्ष जीवंत हो उठता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य है, मिश्रजी के ललित निबंध साहित्य की भाषा और उसे प्रकट करने वाली शैलियों को प्रकाश में लाना। ललित निबंध साहित्य में समाहित विशेषताओं को साहित्यिक पटल पर पाठकों के सम्मुख लाना। निबंध साहित्य के समतामूलक प्रयासों को उजागर करना। डॉ. रामदरश मिश्र के निबंध साहित्य में समाहित भाषागत और शैलीगत विशेषताओं को उजागर करना। उनके ललित निबंधों की विशेषताओं के अनुरूप इसकी महत्ता को साहित्यिक पटल पर लाना। मिश्रजी के ललित निबंधों में भाषाई आयामों से समृद्ध उनकी निबंध कला की ओर साहित्य प्रेमियों व नवीन शोधार्थियों का ध्यान आकर्षित करना। इस कार्य से एक साहित्यकार के अथक प्रयासों को अधिक बल मिलेगा। उसकी लेखनी का आकर्षण सदैव अविस्मरणीय बना रहे, इस हेतु एक लघु प्रयास साबित हो सकता है। उनका साहित्य अपार संभावनाओं का वट वृक्ष है। हिन्दी साहित्य में निबंध विधा एक लोकप्रिय विधा है। ललित निबंध अपने कलेवर और भाषा–शैली के कारण अधिक प्रसिद्ध हैं। मिश्रजी का ललित निबंध साहित्य अपने शब्द–चातुर्य के लिए जाना जाता है। उपने हृदय के उद्गारों को सरल और सहज रूप में पाठकों के सम्मुख रखा है। मिश्रजी के इस सर्वव्यापी और सर्वविधास्पर्शी कार्य को साहित्यिक पटल पर लाना ही शोध का प्रथम उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

निबंध कथेतर गद्य साहित्य की लोकप्रिय विधा है। ललित निबंध इस विधा के आदर्श रूप हैं। इस प्रकार के निबंध अपनी भाषा और शैली के कारण ही अन्य से अलग हो जाते हैं। निबंध लेखक की मानसिक चेतना और उसकी भावात्मक अनुभूति का गद्यात्मक रूप है। ललित निबंध निबंध कल्पना के लोक से दूर होने के कारण सत्य के अधिक निकट माने जाते हैं।

ललित निबंधों के सम्बंध में डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र लिखते हैं–''हलके अन्दाज में गपसप की अन्तरंग शैली में, व्यंग्य–परिहास की उन्मुक्त उद्भावना में भी दर्शन–दीप्ति दिखाई पड़ती है। यही ललित निबंध की सजातीय पहचान है।''4

डॉ. रामदरश मिश्र के निबंधों में मुख्य रूप से गाँव का दर्द दिखाई देता है, जिसमें शब्द–लालित्य का कितना सुन्दर प्रकटीकरण अपने निबंध 'फागुन' में किया है–''फागुन मेरे लिए खुले हुए मस्ती भरे जीवन का प्रतीक है। उसे पाने के लिए तड़पता हूँ क्योंकि उसे मैं अपने जीवन संस्कारों के साथ मिलाकर जी चुका हूँ।''5

मिश्रजी का भाषा के आयामों को सीखने का लगाव प्रारम्भ से ही था। उन्होंने अपने निबंध 'मेरा आत्म संघर्ष' में लिखा है–

''कविता का यह संघर्ष मुख्यतः छन्द और भाषा को पाने का था। विषय तो चारों ओर विखरे थे जो मेरे अनुभव में उतरे थे और उतर रहे थे। भाषा को पाने को अर्थ इतना ही था कि शुद्ध और परिमार्जित भाषा का अभ्यास हो जाए।''6

मिश्रजी के ललित निबंधों की भाषा सरल और सहज है। निबंधों को सामान्य पाठक भी आसानी से समझ सकते हैं। 'मैं और मेरी सर्जना' नामक निबंध की भाषा देखिये–

''खलिहान की याद आते ही मैं अपने खलिहान में पहुँच गया। पाकड़ के दो बड़े–बड़े पेड़, उनके बीच फेला हुआ गाँव भर का खलिहान, चैत का महीना, पाकड़ों से फूटते किसलय, उनके बीच बोलती हुई कोयल, दँवरी की

ध्वनियाँ, रात को किसी के कंठ से फूटता हुआ चैता। क्या अद्‌भुत दृश्य होता था।''7

हिन्दी ललित निबंध साहित्य उसमें समाहित विभिन्न भाषाओं का समागम है। डॉ. रामदरश मिश्र ने ललित निबंधों में अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि अन्य भाषाओं के शब्द भी बहुतायत प्रयोग किए हैं। साथ ही साथ यौगिक, रूढ़, देशज–विदेशज और संकर शब्द भी ललित निबंधों की शोभा बढ़ा रहे हैं। विभिन्न भाषाओं में अंग्रेजी के शब्द फुटपाथ, इमेज, लैंग्वेज, नॉनसेंस, अनवांटेड, स्टूपिड और तनख्वाह, नाचीज, नालायक, शराफत, औरत आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है। इतना ही नहीं अनेक स्थानों पर विविध भाषाओं के वाक्यों से भरे शब्द भी देखने को मिल जाते हैं।

मिश्रजी के ललित निबंध 'तुम्हारी माँ कहाँ है' में एक आधूनिक माँ अंग्रेजी भाषा नहीं अंग्रेजीयत पर गर्व करते–करते किस सीमा तक अंग्रेजी का प्रयोग करने लगे हैं उसका एक रूप देखिये–

''ह्वट नॉनसेंस! दीज स्टूपिड हिन्दीवालाज ऑलवेज टॉक समथिंग वेरी फनी। आइ एम योर मम्मी बेबी!''8

ललित निबंध में मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। *गप्प हांकना, सागर बन जाना, आँखें मिलाना* और *बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय, अब दुबरी, सेठ दुबरी,*
का प्रयोग किया है।

मिश्रजी के साहित्य में ग्रामीण शब्दों खड्डमड्ड, बाबा, लट्ठमार, उजड्ड, अचकचा, बाट आदि प्रयुक्त किये हैं। ....

ललित निबंधों में लोकगीतों का प्रयोग अनेकों स्थानों पर परिस्थिति के अनुकूल किया है। अपने निबंध 'पावस, गाँव, कविता और मैं', जब सूखा पड़ गया तो गाँव की औरतें रात में नंगी होकर हल जोतते हुए ये गीत गुनगुनाती हैं–

''बरखू ए बरखू
कहँवा तू जाके लुकइल ए बरखू''9

रामदरश मिश्र ललित निबंध के सरताज हैं, उनकी ***संवादात्मक शैली*** के छोटे–छोटे वाक्य इनकी प्रभावशीलता को और अधिक रोचक बनाने में समर्थ हैं। 'छोटे–छोटे सुख' नामक निबंध में गाँव के बारे में बपने भाई से हालचाल जानते हैं–उसका संवाद भावात्मक दृश्य को सजीव बना देता है–

''क्या बात है?'' भाई साहब बोले।
''जोखू के साथ संतू याद आ गये।''
''हाँ, वे बेचारे भी नहीं रहे। बुरी मौत मरे।''
''और केशव?''
''वे हैं, ठीक–ठाक हैं।''10

मिश्रजी एक साथ विभिन्न शैलियों का समावेश कर रोचकता प्रदान करने में समर्थ हैं। अपनी पढाई के बाद बनारस छोड़ने का दर्द उन्होंने अपने ललित निबंध 'मैं और मेरी सर्जना' में इस प्रकार काव्यात्मक रूप में ***गीतात्मक शैली*** का सुन्दर समावेश किया है–

''आंखरी मोड़ ना कि हां कहिए
और रोयें कहाँ कहाँ कहिए
राह यह आज तक बहाना थी
आज से जाएं हम, जहाँ कहिए।''11

मिश्रजी ने अपने ललित निबंध 'मेरे जाने के बाद' में शब्दों और भावनाओं के ज्वार में मृत्यु के बाद का समाज क्या सोचता है? उसका ***भावात्मक शैली*** में रोचकीय ढंग से सम्मिलित किया है–

''हाँ–हाँ कुछ तो जानता हूँ, क्या हो गया उन्हें?''

''ओह यह तो बड़ी गलत बात हो गयी, उन्हें रहना चाहिए था। खैर रहे तो और नहीं रहे तो क्या फर्क पड़ता है।''

''जी धन्यवाद कहकर निशांत ने फोन रख दिया।''12

मिश्रजी अच्छी तरह जानते हैं कि कब कौन–सा साहित्यिक पक्ष मजबूत करना है। उन्हें साहित्यिक जीवन सुदीर्घ रहा है। इन राहों में उन्हें जीवन के हर लम्हे का तराना खूब भाया और जिया है। अपने निबंध 'नदियाँ और राष्ट्रीय एकता' में ***विवरणात्मक शैली*** का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है–

''हाँ लेह में सिंधु नदी भले ही एक पतली नदी दिखाई पड़ती हो, किन्तु वह इतनी ही तो नहीं है, वह आगे चलकर विराट रूप धारण कर लेती है। वह विराट रूप भले ही पाकिस्तान चला गया हो किन्तु है तो इस नदी का रूप।...फिर जुड़ती चली जाती हैं स्मृतियाँ सिंधु घाटी सभ्यता की।''13

मिश्र जी ने ***प्रश्नात्मक शैली*** का भी यत्र–तत्र प्रयोग किया है, जिससे उनके संवाद और भी रोचक बन पड़े है–

''तो उससे क्या हो जाएगा? ....उनका महत्त्व साहित्कारों से कम है क्या? निगमबोध घाट पर क्या गण्ना करानी है कि कौन से साहित्यकार महोदय शामिल हुए, कौन नहीं हुए? अब पिताजी को इन सारी बातों से क्या मतलब?''14

'मेरा घर कहाँ है?' ललित निबंध में उद्‌धरण शैली का प्रयोग किया है–

''देख इस नदी के पार वह गाँव है न उसके बाद वाले गाँव के बाद अपना गाँव है।''15

मिश्रजी ने अपने ललित निबंध 'एक वर्ष और' में उन्होने ***विचारात्मक शैली*** का प्रयोग किया है। देश के उन लोगों के बारे में चिंतन करते हुए लिखते हैं–

''उन लाखों करोड़ों अभागे लोगों की तो सोचिए जिनकी जिन्दगी में कोई नया उल्लास, कोई नया सुख आया ही नहीं। कोई भी दिन हो, काम का बोझ उठाते हुए सुबह से शाम तक चलते रहते हैं।''16

'शरद आई' नामक निबंध में ***वर्णनात्मक शैली*** का अनूठा समावेश किया है। इस निबंध में शरद ऋतु की विभिन्न परिस्थितियों और स्थानों का वर्णन किया है–

''विशनपुरा की रामलीला में एक ओर रामलीला चलती थी, दूसरी ओर कुछ लोग रामचरितमानस का गान कर रहे होते थे, जबकि शहर की रामलीलाओं के परिदृश्य में फिल्मी या उसी अंदाज के गीत माइक पर चलते रहते हैं।''17

मिश्रजी ने अपने ललित निबंधों में स्थान–स्थानों पर ***चित्रात्मक शैली*** का प्रयो किया है। 'सर्जना' नामक निबंध में लिखा है–

''तुम्हारे लिए लाता रहा

रंग–बिरंगे उपहार/लैंडस्केप/रेडियो
टी.वी./वीडियो गेम/फ्रीज
तरह तरह के फर्नीचर।''18

'आँचल माँ का, छाँव नीम का' नामक निबंध में श्रीराम परिहार चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए लिखते हैं–

''आखा नीमड़ी री छाया,
जसी माता–पिता री माया,
माया तोड़नू पड़से,
सासरा जावणू पड़से।''19

मिश्रजी ने 'रिमझिम बरसत मेघ रे!' नामक ललित निबंध में मैला आँचल के उद्धरणों का प्रयोग किया है। इस निबंध में ***उद्धरण शैली*** का प्रयोग कर निबंध को आकर्षक और रोचक बनाया है–

''डॉक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया है। उसे लगता है मानो वह युग–युग से धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी, तालाब, पेड़–पौधे, जंगल–मैदान, जीव–जानवर, कीड़े–मकौड़े सभी में एक विशेषता देखता है।''

''गोल्डमोहर–गुलमोहर–कृष्णचूड़ा। गुलमोहर का कृष्णचूड़ा नाम कितना मौजूँ लगता है। काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते हैं।''20

डॉ. रामदरश मिश्र ने ललित निबंध 'शोर मत करो, आदमी सो रहे हैं!' में ***व्यंगात्मक शैली*** में समाज के उन लोगों पर कटाक्ष किया है, जो शोर–शराबा कर रात–दिन भजन कीर्तन में लगे रहते हैं–

''चुपचाप पूजा करने वाले या भजन–कीर्तन करने वाले तो स्वार्थी लोग हैं–केवल अपना लाभ देखते हैं। लेकिन 'माइक कीर्तनहा' परोपकारी हैं–जो चाहें उनको भी, जो न चाहें उनको भी ये पवित्र करते रहते हैं।''21

इस प्रकार विभिन्न शैलियों का यथास्थान प्रयोग कर मिश्रजी ने ललित निबंधों को रोचक और पाठकोपयोगी बनाया है। शैलियाँ साहित्य का प्राण हैं जिनके बिना एक गम्भीर और साहित्यिक निबंध की कल्पना नही की जा सकती है। ललित निबंधों को जीवंत बनाने का कार्य निबंध की शैलियाँ ही कर सकती हैं। शैलियाँ ललित निबंध का आभूषण हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी ललित निबंध अपनी भाषा और शैलियों से संस्कार ग्रहण कर विभिन्न शब्द रूपी मणियों के श्रृंगार से सौन्दर्य का आनन्द लेते रहते हैं। सरल और सहज भाषा ललित निबंध के आँख–कान हैं। डॉ. रामदरश मिश्र इस प्रकार की कला को आत्मसात कर हिन्दी साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। उन्होने अपने ललित निबंधों की भाषा और शैलियों का एक महामिलन का कार्य किया। मिश्रजी के निबंध साहित्य में व्याप्त विभिन्न विशेषतओं को साहित्यिक धरातल पर लाकर सर्वशुलभ करने का एक प्रयास है। उनके ललित निबंध आत्मीयता के अक्षय भण्डार हैं। उनकी भाषा आम जन की भाषा है। प्रस्तुतीकरण, घटनाओं का उल्लेख और शब्दों का प्रस्फुटीकरण यथोचित रूप से करना उनकी विशेषता है। कथेतर गद्य साहित्य में ललित निबंधों में भाषा और शैली विवेचन में आज भी सीमित कार्य है। इस दिशा में अभी तक के कुछ गम्भीर प्रयासों के बाद भी अपेक्षित सफलता नहीं कहा जा सकता। प्रस्तुत शोध के माध्यम से नवीन शोध कर्ताओं का ध्यान कथेतर विधाओं के इस विश्लेषण की ओर आकर्षित करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 27*
2. *वेद राठी–हिन्दी ललित निबंध स्वरूप विवेचन, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, उ.प्र.पृ.68*
3. *वेद राठी–हिन्दी ललित निबंध स्वरूप विवेचन, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, उ.प्र.पृ.69*
4. *डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र–श्रेष्ठ ललित निबंध, पृ. 16*
5. *डॉ. रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 24*
6. *रामदरश मिश्र, घर–परिवेश, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली 2013 पृ. 21*
7. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ. 23*
8. *रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 47*
9. *रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 111*
10. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ. 22*
11. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ.26*
12. *डॉ. रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 153*
13. *रामदरश मिश्र, घर–परिवेश, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली 2013 पृ. 114*
14. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ. 125*
15. *डॉ. रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 121*
16. *रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 162*
17. *रामदरश मिश्र.स्मिता मिश्र–रामदरश मिश्र रचनावली,नमन प्रकाशन नई दिल्ली,2000, पृ.299*
18. *रामदरश मिश्र–नया चौराहा, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2013 पृ. 187*
19. *वही, पृष्ठ 108*
20. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ. 37*
21. *रामदरश मिश्र, छोटे–छोटे सुख, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 2006, पृ. 117*